# पद्मपुराण अन्तर्गत

## रामनामामृत स्तोत्र – श्रीकृष्ण के द्वारा श्रीअर्जुन के प्रति

### श्रीअर्जुनंप्रति श्रीकृष्णवाक्यम्

अर्जुन के प्रति श्रीकृष्ण के वाक्य

**अर्जुन उवाच**

**भुक्तिमुक्तिप्रदातृणां सर्वकामफलप्रद। सर्वसिद्धिकरानन्त नमस्तुभ्यं जनार्दन।।46।।**

हे जनार्दन ! हे भुक्ति और मुक्ति प्रदान करने वालों की सभी कामनाओं के अनुसार फल प्रदान करने वाले ! हे समस्त सिद्धियों को सुलभ करने वाले ! हे अनन्त आपको नमस्कार हो।

**यं कृत्वा श्रीजगन्नाथ मानवा यान्ति सद्गतिम्। ममोपरि कृपां कृत्वा तत्त्वं ब्रूहिसुखालयम्।।47।।**

हे श्रीजगन्नाथ ! मनुष्य जिसको करके सद्गति को प्राप्त करते हैं उस सुख के आलय को मेरे ऊपर कृपा करके कहिए।

## श्रीकृष्ण उवाच

**यदि पृच्छसि कौन्तेय सत्यं सत्यं वदाम्यहम्। लोकानान्तु हितार्थाय इह लोके परत्र च।।48।।**

हे कुन्तीनन्दन ! यदि तुम पूछते हो तो मनुष्यों के इस लोक और परलोक में कल्याण के लिए मैं सत्य-सत्य कहता हूँ।[1]

**रामनाम सदा पुण्यं नित्यं पठति यो नरः। अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वकामफलप्रदम्।।49।।**

सदा पुण्यप्रद श्रीरामनाम का जो नित्य पाठ करता है वह यदि अपुत्र है तो वह समस्त कामनाओं के अनुरूप फल प्रदान करने वाले पुत्र को प्राप्त करता है।

**मङ्गलानि गृहे तस्य सर्वसौख्यानि भारत। अहोरात्रं च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम्।।50।।**

जो दिन रात 'राम' इन दो अक्षरों का उच्चारण करता है हे भरतवंशी अर्जुन ! उसके घर में समस्त सुख और मंगल सदा निवास करते हैं।

**गंगा सरस्वती रेवा यमुना सिन्धु पुष्करे। केदारे तूदकं पीतं राम इत्यक्षरद्वयम्।।51।।**

जिसने 'राम' इन दो अक्षरों का उच्चारण किया उसने श्रीगङ्गा श्रीसरस्वती, नर्मदा, यमुना, सिन्धु, पुष्कर और केदार में जल पी लिया।

**अतिथेः पोषणञ्चैव सर्वतीर्थावगाहनम्। सर्वपुण्यं समाप्नोति रामनामप्रसादतः।।52।।**

श्रीरामनाम के प्रभाव से मनुष्य अतिथि सेवा और समस्त तीर्थों के अवगाहन जन्य पुण्यों को प्राप्त कर लेता है।

**सूर्य्यपर्वणि[2] कुरुक्षेत्रे कार्तिक्यां स्वामिदर्शने। कृपापात्रेण वै लब्धं येनोक्तमक्षरद्वयम्।।53।।**

जिसने 'राम' इन दो अक्षरों का उच्चारण किया, श्रीरामनाम के उस कृपापात्र को सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में स्नान करने का तथा कार्तिक मास में श्रीस्वामी कार्तिकेय के दर्शन का पुण्य सहज में प्राप्त हो जाता है।

**न गंगा न गया काशी नर्मदा चैव पुष्करम्। सदृशं रामनाम्नस्तु न भवन्ति कदाचन।।54।।**

श्रीगङ्गाजी, गया, काशी, नर्मदा और पुष्कर आदि अनन्त पतितपावन तीर्थ अन्तःकरण की शुद्धि हेतु श्रीरामनाम की तुलना नहीं कर सकते हैं अर्थात् श्रीरामनाम के जप से जितनी सहजता से अन्तःकरण पवित्र होता है अनन्त तीर्थों के अवगाहन से नहीं। तीर्थों के अर्थात् श्रीगङ्गाजी आदि के जल का कुछ दिनों तक

---

1. रामनाम संजीवनी महामनोहर मूरि। जासु जीह जिय विच वसी तासु सुजल भलि भूरि।।
2. सूर्यग्रहे इत्येव सुवचम्।

निरन्तर सेवन करने से जो अन्तःकरण की शुद्धि प्राप्त होती है वह श्रीरामनाम के जप से तत्काल प्राप्त हो जाती है जैसा कि भागवतकार ने लिखा है- सद्यः पुनन्त्युपस्पृष्टाः स्वर्धुन्यापोऽनुसेवया (भा. 1.1.15)

**येन दत्तं हुतं तप्तं सदा विष्णुः समर्चितः। जिह्वाग्रे वर्तते यस्य राम इत्यक्षरद्वयम्।।55।।**

जिसके जिह्वा के अग्रभाग में 'राम' यह दो अक्षर विराजमान है उसने हर प्रकार के दान, हवन और तप का अनुष्ठान कर लिया और हमेशा हमेशा के लिए भगवान् विष्णु की अर्चना कर लिया।

**माघस्नानं कृतं तेन गयायां पिण्डपातनम्। सर्वकृत्यं कृतं तेन येनोक्तं रामनामकम्।।56।।**

जिसने श्रीरामनाम का उच्चारण कर लिया उसने तीर्थराज श्रीप्रयाग में माघ स्नान का , श्रीगयाजी में पिण्डदान का तथा वेद, पुराण और संहिता में विहित समस्त शुभ कृत्यों के अनुष्ठान का फल सहज में प्राप्त कर लिया।[1]

**प्रायश्चित्तं कृतं तेन महापातकनाशनम्। तपस्तप्तं च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम्।।57।।**

जिसने "राम" इन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने महापातकनाशक प्रायश्चित्त को कर लिया और सभी प्रकार के तप का अनुष्ठान कर लिया।

**चत्वारः पठिता वेदास्सर्वे यज्ञाश्च याजिताः। त्रिलोकी मोचिता तेन राम इत्यक्षरद्वयम्।।58।।**

जिसने "राम" इन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने समस्त शाखा, अङ्ग और उपाङ्ग के सहित चारों वेदों का पाठ कर लिया और विधि सहित समस्त यज्ञों का अनुष्ठान कर लिया तथा तीनों लोकों के जीवों को दुखजाल से छुड़ा दिया।

**भूतले सर्वतीर्थानि आसमुद्रसरांसि च। सेवितानि च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम्।।59।।**

जिसने "राम" इन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने ब्रह्माण्ड के सब तीर्थों, समुद्र पर्यन्त समस्त सरोवरों में स्नान, दान और सेवन कर लिया।

## अर्जुन उवाच

अर्जुन ने कहा-

**यदा म्लेच्छमयी पृथ्वी भविष्यति कलौ युगे। किं करिष्यति लोकोऽयं पतितो रौरवालये।।60।।**

---

1. चाहो चारों ओर दौर देखो गौर ज्ञान विना दीनता न छीन होय झीन अघ आग है।
जहॉ तक साधन सुराधन विलोकिये जू बाधन उपाधन सहित नट बाग है।
तीरथ की आस सो तो नाहक उपास्य हेतु एक बार राम कहे कोटिन प्रयाग है।
युगल अनन्य इत उत भ्रम श्रम दाम नाम के रटन बिनु छूटत न दाग है।।

हे भगवन् ! जब यह पृथिवी सर्वथा म्लेच्छों से आक्रान्त हो जायेगी, सम्पूर्ण वातावरण रौरव नरक तुल्य हो जायेगा उस समय मनुष्य किस साधन के सहारे इस लोक में सुखी रहते हुए परम पद को प्राप्त करेगा ?

## श्रीकृष्ण उवाच

श्रीकृष्ण ने कहा-

**न सन्देहस्त्वया कार्य्यो न वक्तव्यं पुनः पुनः। पापी भवति धर्मात्मा रामनामप्रभावतः।।61।।**

हे अर्जुन ! श्रीरामनाम के विषय में तुम्हें सन्देह नहीं करना चाहिए और न ही बार-बार कहना चाहिए। चाहे जैसा भी पापी हो श्रीरामनाम के प्रताप से शुद्ध होकर पापी भी धर्मात्मा हो जाता है।

**न म्लेच्छस्पर्शनात्तस्य पापं भवति देहिनः। तस्मा मुच्यते जन्तुर्यस्स्मरेद्रामद्वयक्षरम्।।62।।**

जो "राम" इन दो अक्षरों का स्मरण करेगा उनको म्लेच्छों के स्पर्श से पाप नहीं लगेगा क्योंकि श्रीरामनाम के प्रभाव से म्लेच्छों के स्पर्श सम्बन्धी पाप से वे शीघ्र ही मुक्त हो जाते हैं।

**रामस्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः। कुलायुतं समुद्धृत्यरामलोके महीयते।।63।।**

जो श्रद्धाभक्तिपूर्वक श्रीरामजी के स्तोत्रों का पाठ करते हैं वे मनुष्य अपने कुल की दस हजार पीढ़ी का उद्धार करके श्रीसीतारामजी के दिव्य लोक साकेत में पूजित होते हैं।

**रामनामामृतं स्तोत्रं सायं प्रातः पठेन्नरः। गोघ्नः स्त्रीबालघाती च सर्वपापैः प्रमुच्यते।।64।।**

श्रीरामनाम से संयुक्त अमृतमय स्तोत्रों का जो श्रद्धा विश्वासपूर्वक प्रातःकाल और सायंकाल पाठ करता है वह गोहत्या, बालहत्या और स्त्रीहत्या जन्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।